लखनऊ
जागरण सिटी
दैनिक जागरण लखनऊ, 27 अप्रैल 2016 www.jagran.com

आंचलिक विज्ञान नगरी में लगी प्रदर्शनी देखतीं छात्राएं

खास है रॉक आर्ट पर आधारित झोपड़ी

◆ आंचलिक विज्ञान नगरी में शैल चित्र प्रदर्शनी शुरू

जागरण संवाददाता, लखनऊ : आंचलिक विज्ञान नगरी में दुनिया भर के शैल चित्रों की एक प्रदर्शनी मंगलवार को शुरू हुई। प्रदर्शनी में भारत के अलावा अमेरिका, आस्ट्रेलिया, यूरोप व अफ्रीका के शैल चित्रों का नजारा लिया जा सकेगा। प्रदर्शनी का उद्घाटन बीरबल साहनी पुरासाइंसेस संस्थान के निदेशक डॉ. सुनील बाजपेई ने किया। उन्होंने कहा कि शैल चित्रों के रूप में बिखरी धरोहर को संजोने के लिए हमें जनजागरूकता करनी होगी। प्रो. बाजपेई ने कहा कि यह केवल किसी एक फील्ड से जुड़ा विषय नही है। इसके लिए अलग-अलग फील्ड के लोगों को एक साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। इस मौके पर इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट की वीना जोशी ने शैल चित्रों को पुरानी संस्कृति को समझने के लिए काफी महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि इसके लिए आम लोगों खासतौर पर विद्यार्थियों को जोड़ना जरूरी है। इससे वह शैल चित्रों के महत्व को समझकर उसके संरक्षण में योगदान दे सकेंगे। नेशनल रिसर्च रिसर्च लैबोरेटरी फॉर द कल्चरल प्रॉपर्टी (एनआरएलसी) के निदेशक डॉ. बीवी खरबड़े ने कहा कि हजारों वर्ष पुराने रॉक आर्ट हमारी सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ यह बताते है कि कैसे हमने तरक्की की। आइजीएनसीए के डॉ. बीएल मल्ला ने कहा कि सभी प्रांतों में मिले शैल चित्रों में समानता इस बात का द्योतक है कि सोचने की समझ एक सी थी। उन्होंने भारत में शैल चित्रों के डॉक्यूमेंटेशन के बारे में भी जानकारी दी। बीएसआइपी के डॉ. सीएम नौटियाल ने कहा कि उत्तर प्रदेश में सोनभद्र-मिर्जापुर में शैल चित्रों की काफी संपदा है। उन्होंने बताया कि इसका डॉक्यूमेंटेशन व कार्बन डेटिंग के प्रयास शुरू किए गए है। यही नही लोगों को भी इसके प्रति जागरूक किया जा रहा है।